आदिवासी लोक कला अकादेमी

मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्-भोपाल

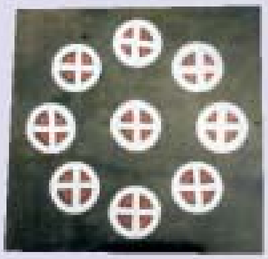

मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् के तहत आदिवासी लोक कला अकादेमी कार्यरत है जिसमें तुलसी साहित्य प्रभाग भी सम्मिलित है। आदिवासी लोक कला अकादेमी प्रदेश की जनजातीय और लोक रूपंकर तथा प्रदर्शनकारी कलाओं के संरक्षण, संवर्द्धन, प्रोत्साहन एवं सम्मान की दृष्टि से जनजातीय और लोक कलाओं के विभिन्न पक्षों पर कार्य के अलावा तुलसी और भक्ति साहित्य का अन्वेषण, प्रचार–प्रसार और संरक्षण के लिए कार्य कर रही है।

मध्यप्रदेश शासन एवं परिषद् द्वारा निर्धारित मापदण्डों एवम् उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सर्वेक्षण, कार्यक्रम, प्रकाशन, दीर्घा, संग्रहालय तथा शोध संस्थान का संचालन किया जा रहा है।

मध्यप्रदेश की सांस्कृतिक पहचान उसके लोकांचलों से बनती है। एक तरफ निमाड़ी, मालवी, बुन्देली और बघेली लोक संस्कृतियों का पारदर्शी समागम है तो दूसरी तरफ जनजातियों की आदिम कला–संस्कृति का विशाल संसार मौजूद है। लोक और जनजातीय कला, संस्कृति का ऐसा दुर्लभ समन्वय मध्यप्रदेश में जैसा है वैसा अन्य प्रान्तों में मिलना मुश्किल है। प्रत्येक अंचल की अपनी संगीत, नृत्य, शिल्प आदि की समृद्ध और वैविध्यपूर्ण परम्परा है। विभिन्न लोक और जनजातीय संस्कृति होने के कारण प्रदेश की एक विशिष्ट पहचान है। इसी तरह संतकवि गोस्वामी तुलसीदास जी के कृतित्व एवं भक्ति परम्परा के विविध पक्षों पर कार्य करके प्रदेश ने देशभर में विशिष्ट पहचान निर्मित की है।

जनजातियों और अनुसूचित जातियों के जनजीवन, कला, साहित्य और संस्कृति पर केन्द्रित गोण्ड, बैगा, भील, मुरिया, दण्डामी–माड़िया, सहरिया, कोल, और कोरकू जनजातियों तथा घुमन्तु, बसदेवा, देवार और सतनामी अनुसूचित जातियों का सर्वेक्षण एवं दस्तावेजीकरण किया गया है। शिल्प निर्माण परम्परा एवं तकनीक पर केन्द्रित धातु, मिट्टी और काष्ठ शिल्प सर्वेक्षण, दस्तावेजीकरण तथा प्रकाशन किया गया।

प्रदेश के कुछ महत्वपूर्ण, कलारूपों और कलाकारों पर सर्वेक्षण एवं प्रलेखन कार्य किया गया है।, जिसमें पंडवानी गायन एवं पंडवानी के शीर्षस्थ कलागुरू श्री झाडूराम देवांगन, मालवा की संजा, निमाड़ी नृत्यनाट्य काठी, छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य रहस एवं नाचा और बुन्देलखण्ड के राई नृत्य का सर्वेक्षण प्रमुख है।

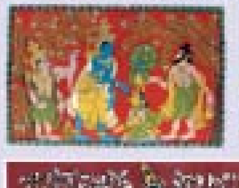

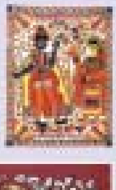

देश के कई प्रदेशों में विभिन्न चित्र शैलियों में सम्पूर्ण रामकथा चित्र बनाने की परम्परा है। अकादेमी ने रामकथा चित्र संकलन योजना के अन्तर्गत अब तक बिहार की मधुबनी, उड़ीसा की पट्ट, पश्चिम बंगाल की पटुआ, आन्ध्रप्रदेश की कलमकारी और चेरियाल पटम तथा महाराष्ट्र की चित्रकथी शैली में रामकथा के चित्र बनवाकर संकलित किये हैं, जो देश का पहला अनूठा संग्रह है। अकादेमी द्वारा आयोजित राष्ट्रीय रामलीला मेले के अवसर पर इनकी प्रदर्शनी भी लगायी जाती है। राष्ट्रीय रामलीला मेला ५ दिवसीय आयोजन है, जिसमें देश की अलग–अलग लीला मंचन शैलियों में रामलीला के विभिन्न प्रसगों के प्रदर्शन होते हैं।

अकादेमी ने लोक और जनजातीय समाज में वाचिक परम्परा में प्रचलित विभिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले गीत, गाथाएँ, कबीर भजन आदि की ऑडियो रिकार्डिंग की है।

अनुसूचित जाति, जनजाति और लोक समाज में प्रचलित वाद्य, आभूषण, वस्त्र विविध माध्यमों यथा धातु, मिट्टी, काष्ठ आदि शिल्पों का संग्रहण और उनका समय–समय पर प्रदर्शन किया है।

अकादेमी प्रतिवर्ष चित्र शिविर का आयोजन करती है इस चित्र शिविर में अनुसूचित जाति, जनजाति और लोक चित्रकारों को आमंत्रित कर पारम्परिक भित्ति चित्र, भूमि चित्र और गोदना अलंकरणों का चित्रांकन कराकर संकलन एवं देश के नगरों, महानगरों में प्रदर्शनी आयोजित कर प्रदर्शन किया जाता है।

'आदिवर्त' जनजातीय लोककला राज्य संग्रहालय, खजुराहो मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्य के जनजातीय और लोक कला रूपों पर केन्द्रित स्थापित किया गया है, जिसमें बहुविध शिल्पों का प्रदर्शन पर्यटकों को दृष्टिगत रखते हुए किया गया है। आदिवर्त में समय–समय पर विभिन्न शिल्प माध्यमों की कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं।

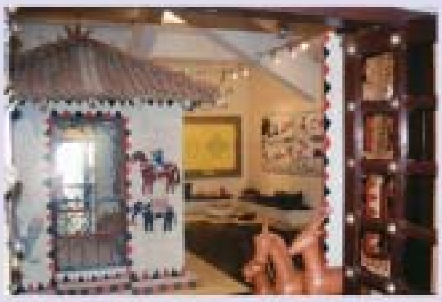

प्रमोदवन चित्रकूट में तुलसी शोध संस्थान संचालित किया जा रहा है। संस्थान में विभिन्न विषयों के साथ–साथ प्रमुख रूप से भक्ति, तुलसी और रामकथा साहित्य से संबंधित पुस्तकों का संकलन है। पुस्तकालय से स्थानीय नागरिक, विद्यार्थी एवं शोधार्थी लाभान्वित होते हैं। शोध कार्य हेतु अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा से संबद्ध है। यहाँ दुर्लभ ग्रन्थ पाण्डुलिपियों का संकलन एवं संरक्षण भी किया जा रहा है। समय–समय पर तुलसी और भक्ति साहित्य से संबंधित आयोजन भी आयोजित किए जाते हैं।

अकादेमी ने प्रदेश की अनुसूचित जाति, जनजाति और लोक प्रदर्शनकारी कलारूपों को स्तरीय मंच और समुचित सम्मान देने की दृष्टि से स्थायी मंचों के माध्यम से तथा प्रदेश के विभिन्न अंचलों में रूपंकर और प्रदर्शनकारी कला पर केन्द्रित समारोह आयोजित किये जाते हैं। इनमें गणतंत्र दिवस को समारोहित करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित लोकरंग–भोपाल, निमाड़ उत्सव–महेश्वर तथा जनजातीय नृत्यों पर केन्द्रित 'सम्पदा' और जिला मुख्यालयों पर लोकोत्सव एवं श्रुति श्रृंखला के अन्तर्गत फाग प्रसंग/भक्तिपर्व के आयोजन मुख्य हैं।

इसके अलावा देश के अन्य सांस्कृतिक केन्द्रों, विभागों, संस्थाओं द्वारा आयोजित स्तरीय समारोहों के लिए अकादेमी द्वारा सहयोग एवं संयोजन का कार्य किया जाता है।

तुलसी और भक्ति साहित्य पर केन्द्रित मंगलाचरण, जनरंजन, लोकमंगल, तुलसी उत्सव और व्याख्यानमाला तुलसी साहित्य प्रभाग के प्रमुख आयोजन हैं। तुलसी पंचशती समारोह समिति के निर्णयानुसार भी अनेक गतिविधियाँ आयोजित की गई हैं।

जनजातीय और लोक साहित्य पर केन्द्रित चौमासिक पत्रिका चौमासा तथा वाचिक परम्परा पर एकाग्र पुस्तिकाओं के प्रकाशन प्रमुख हैं। वाचिक परम्परा पर केन्द्रित पुस्तिका प्रकाशन की श्रृंखला में अब तक बघेलखण्ड के लोकगीत, बुन्देलखण्ड के संस्कार गीत, मालवा के लोकगीत, भरथरी, गणगौर, कहे जन सिंगा, बसंत गीत, ईसुरी, कुमाउँनी लोकगीत, कहनात, कृष्ण लीला गीत, जनजातीय प्रेमगीत, पूर्वांचल के लोकगीत, लोकांचलों के प्रेमगीत, मालवा की लोकथाएँ, बुन्देली का फाग साहित्य, मध्यप्रदेश का लोकनाट्य माच, पाबूजी की पड़, ख्याल अलीबख्श, बसन्त के रंग, वृक्ष पुराण, तँवरधारी संस्कार गीत और गोण्ड जनजातीय गीत बुन्देलखण्ड के संस्कार गीत, कोरकू संस्कार गीत, मालवी कथाएँ आदि प्रमुख रूप से प्रकाशित की गई हैं। चौमासा के अब तक ६३ अंक प्रकाशित किये गये हैं।

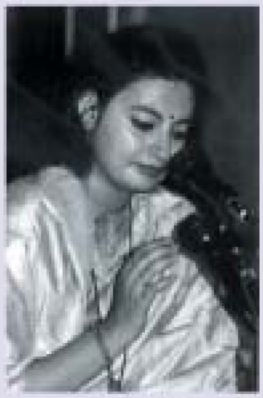

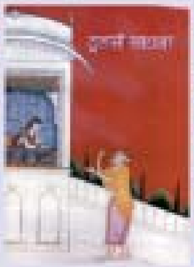

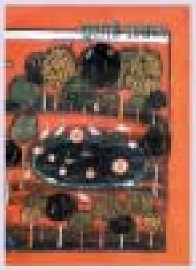

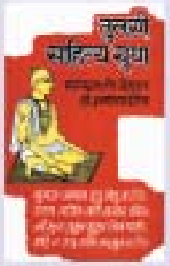

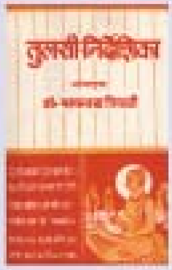

तुलसी साहित्य प्रभाग ने तुलसी साहित्य सुधा, तुलसी निर्देशिका, लोकजीवन में राम, विरागी–अनुरागी, लोकरामायण, श्रीराम कथा चित्र वीथिका, मानस भारती नवनीत, रत्नावली, भक्ति रामकथा और तुलसी पुस्तक सहित समाधान के तीन अंक और व्याख्यान पुस्तिकाएँ प्रकाशित कराई है। नियमित मासिक पत्रिका तुलसी साधना का प्रकाशन किया गया है। तुलसी साधना के अब तक ५२ अंक प्रकाशित किये गये है। अप्रैल २००३ से वर्ष में चार अंक प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों की सांस्कृतिक परम्परा तथा महत्वपूर्ण कलारूपों और कलाकारों पर सर्वेक्षण के आधार पर तैयार विनिबंधों को मोनोग्रॉफ एवं सर्वे रिपोर्ट के रूप में प्रकाशित किया गया है, जिनमें गोंड, बैगा, भील, सहरिया, कोरकू, मुरिया, दण्डामी माड़िया, भील और भगोरिया, कोल, देवार, बसदेवा, राई, रहस, संजा, पण्डवानी और झाडूराम देवांगन, काठी, मध्यप्रदेश के मिट्टी शिल्प, मध्यप्रदेश के काष्ठ शिल्प और मध्यप्रदेश के धातु शिल्प मोनोग्रॉफ एवं सर्वे रिपार्ट प्रमुख हैं।

स्वतंत्रता की चालीसवीं वर्षगांठ के अवसर पर जनजातीय और लोकांचलों में स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान गाये जाने वाले गीतों का 'सुराज' पुस्तक के रूप में प्रकाशन किया गया है।

प्रदेश की जनजातियों एवं लोकांचलों में सृजित किये जाने वाले पारम्परिक चित्रों का "सृष्टि–एक–दो–तीन" पोर्टफोलियो के प्रकाशन की श्रृंखला प्रारम्भ की गई है। जिसमें गोंड, भील और लोकचित्रों को पुनर्प्रकाशित किया गया है। पोर्टफोलियो में विभिन्न आकार के चित्रों को पुनर्प्रकाशित किया गया है।

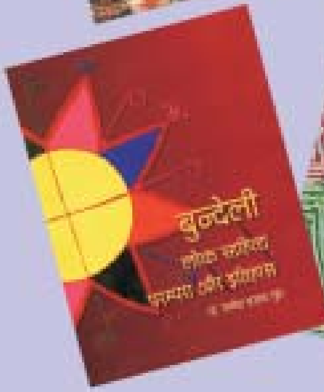

अमृतस्य नर्मदा, परम्परा, प्रतिरूप, कथावार्ता–एक, कथावार्ता–दो क्रमशः रेखांकन, चित्र एवं शिल्प निर्माण परम्परा, मुखौटे एवं जनजातीय मिथ कथाओं एवं लोककथाओं के संकलन का पुस्तक के रूप में प्रकाशन किया गया है। चौमासा के लिये आयोजित विभिन्न परिसंवादों को प्रत्यय पुस्तक में संकलित कर हिन्दी और अंग्रेजी में प्रकाशित किया गया है।

निमाड़ी निर्गुण संत अफजल साहब के वचनों का संकलन दो खण्डों में 'अमर सागर' के नाम से प्रकाशित किया गया है। मध्यप्रदेश के बुन्देलखण्ड अंचल में ही नहीं वरन सम्पूर्ण उत्तर भारत की लोक परम्परा में सबसे प्रभावशाली लोककाव्य के रूप में आल्हाखण्ड की प्रतिष्ठा है। अकादेमी द्वारा चंदेलकालीन लोक महाकाव्य 'आल्हा' के प्रामाणिक पाठ का पुस्तक रूप में प्रकाशन किया गया है।

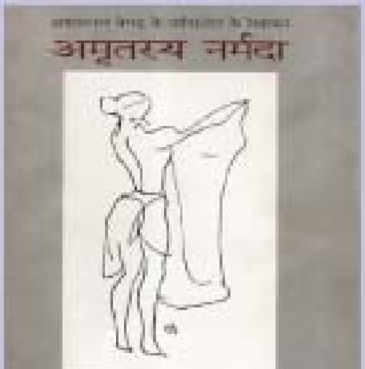

विशिष्ट जनपदीय ईकाई के रूप में प्रदेश के चारों सांस्कृतिक लोकांचलों की लोक सांस्कृतिक परम्परा, भूगोल, इतिहास तथा कला परम्परा के समवेत अध्ययन और उसके प्रकाशन की श्रृंखला में बघेली संस्कृति और साहित्य, बुन्देली संस्कृति और साहित्य, निमाड़ी संस्कृति और साहित्य, मालवीय संस्करति और साहित्य पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। स्वतन्त्र पुस्तक प्रकाशन श्रृंखला के अन्तर्गत 'बुन्देली लोक साहित्य परम्परा और इतिहास पुस्तक का प्रकाशन किया गया है।

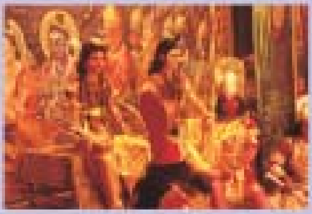

पिछले वर्षों से अकादेमी ने ग्रीटिंग कार्डस का प्रकाशन प्रारंभ किया है अभी तक ६० प्रकार के १०००,१००० प्रतियों में ग्रीटिंग कार्ड्स प्रकाशित कर विक्रय के लिए उपलब्ध कराये गये हैं।

तुलसी शोध संस्थान चित्रकूट के लिए दस हजार स्क्वायर फीट भूमि निःशुल्क प्राप्त हुई है। इस भूमि पर तुलसी शोध संस्थान भवन का निर्माण सांसद निधि से आर्थिक सहयोग प्राप्त कर कार्य कराया जा रहा है। तुलसी साहित्य प्रभाग द्वारा तुलसी साहित्य को केन्द्र में रखकर समूची भक्ति परम्परा पर कार्य करने की योजना बनाई जा रही है, जिसके तहत् समस्त भक्त कवियों के वाचिक परम्परा में उपलब्ध पाठों, रचनाओं, पुस्तकों का संकलन, प्रकाशन, प्रदर्शन किया जाना प्रस्तावित है। तुलसी शोध संस्थान चित्रकूट को आधुनिक संसाधनों के साथ बहुमुखी और प्रभावी शोध केन्द्र का स्वरूप दिया जाना प्रस्तावित है।

अकादेमी द्वारा "साकेत" रामकथा संग्रहालय–ओरछा की स्थापना की जाना है। साकेत रामकथा संग्रहालय में देश की विभिन्न आंचलिक चित्र शैलियों में रामकथा चित्रांकन के विविध प्रसंगों के प्रदर्शन के साथ रामलीला मंचन की विभिन्न लोक शैलियों से जुड़े पात्रों के कलात्मक मुखौटे और मुकुट का प्रदर्शन किया जायेगा। यह रामायण से संबंधित पारम्परिक कलाओं का देश का पहला केन्द्र होगा।